Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
Marathi Part - I

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

# CONTENTS OF MARATHI PART - I


| अ. क्र. | लेख आणि लेखकाचे नाव | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| १ | बदलत्या पर्यावरणाचे मराठी साहित्यातून झालेले चित्रण : कादंबरी<br>**प्रा. डॉ. अनिल बळीराम बांगर** | १-९ |
| २ | पर्यावरण चळवळींचे ऐतिहासिक मूल्य चिंतन<br>**श्री. अनिल महादेव बोराडे** | १०-१६ |
| ३ | महाराष्ट्रातील पर्यावरण संवर्धनात कृषी पर्यटनाचे योगदान<br>**प्रा. अनिल नि. शिंदे** | १७-२४ |
| ४ | संत साहित्यातील प्रतिबिंबीत पर्यावरण विचार : एक दृष्टीक्षेप<br>**प्रा. धनेश मधुकर हरड** | २५-३१ |
| ५ | जैवविविधता : संरक्षण व संवर्धन<br>**डोंगरजाळ भाग्यशाली रामसिंग** | ३२-३५ |
| ६ | शाश्वत विकास आणि भारतातील पर्यावरण चळवळी<br>**डोंगरजाळ सरिता रामसिंग** | ३६-३९ |
| ७ | अहमदनगर जिल्ह्यातील फळ विक्रेत्यांचे अर्थशास्त्र<br>**डॉ. सुहास आव्हाड**<br>**ईश्वर अरूण म्हस्के** | ४०-४३ |
| ८ | भारतातील पर्यावरणवादी चळवळ<br>**प्रा. काळुराम दामू शिंदे** | ४४-४७ |
| ९ | तुकडोजी महाराज यांचे शाश्वत कृषी विकास संकल्पनेतून पर्यावरण विकास संदर्भातील विचार आणि सूचविलेले उपाय<br>**शुभांगी विजयराज मोहोड** | ४८-५४ |
| १० | दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांचे अध्ययन<br>**डॉ. अतुल हंसराज साळुंके** | ५५-५७ |
| ११ | बदलत्या पर्यावरणाचा आगरी मराठी कवितेवर झालेला परिणाम : एक आकलन<br>**डॉ. संदीपान श्रीमंत नवगिरे** | ५८-६३ |
| १२ | नाबार्ड बँकाचे ग्रामीण शेतकऱ्यांची विकासातील योगदान : एक अभ्यास<br>**प्रा. डॉ. बिराजदार एस. एम.** | ६४-६८ |

# CONTENTS OF MARATHI PART - I


| अ.क्र. | लेख आणि लेखकाचे नाव | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| १ | बदलत्या पर्यावरणाचे मराठी साहित्यातून झालेले चित्रण : कादंबरी<br>**प्रा. डॉ. अनिल बळीराम बांगर** | १-९ |
| २ | पर्यावरण चळवळींचे ऐतिहासिक मूल्य चिंतन<br>**श्री. अनिल महादेव बोराडे** | १०-१६ |
| ३ | महाराष्ट्रातील पर्यावरण संवर्धनात कृषी पर्यटनाचे योगदान<br>**प्रा. अनिल नि. शिंदे** | १७-२४ |
| ४ | संत साहित्यातील प्रतिबिंबीत पर्यावरण विचार : एक दृष्टीक्षेप<br>**प्रा. धनेश मधुकर हरड** | २५-३१ |
| ५ | जैवविविधता : संरक्षण व संवर्धन<br>**डोंगरजाळ भाग्यशाली रामसिंग** | ३२-३५ |
| ६ | शाश्वत विकास आणि भारतातील पर्यावरण चळवळी<br>**डोंगरजाळ सरिता रामसिंग** | ३६-३९ |
| ७ | अहमदनगर जिल्ह्यातील फळ विक्रेत्यांचे अर्थशास्त्र<br>**डॉ. सुहास आव्हाड**<br>**ईश्वर अरूण म्हस्के** | ४०-४३ |
| ८ | भारतातील पर्यावरणवादी चळवळ<br>**प्रा. काळुराम दामू शिंदे** | ४४-४७ |
| ९ | तुकडोजी महाराज यांचे शाश्वत कृषी विकास संकल्पनेतून पर्यावरण विकास संदर्भातील विचार आणि सूचविलेले उपाय<br>**शुभांगी विजयराज मोहोड** | ४८-५४ |
| १० | दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांचे अध्ययन<br>**डॉ. अतुल हंसराज साळुंके** | ५५-५७ |
| ११ | बदलत्या पर्यावरणाचा आगरी मराठी कवितेवर झालेला परिणाम : एक आकलन<br>**डॉ. संदीपान श्रीमंत नवगिरे** | ५८-६३ |
| १२ | नाबार्ड बँकाचे ग्रामीण शेतकऱ्यांची विकासातील योगदान : एक अभ्यास<br>**प्रा. डॉ. बिराजदार एस. एम.** | ६४-६८ |

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

# १०. दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांचे अध्ययन

**डॉ. अतुल हंसराज साळुंके**
डॉ. सी. डी. देशमुख वाणिज्य व सौ. कुसुमताई ताम्हाणे कला महाविद्यालय, रोहा, जि. रायगड.

**१) प्रस्तावना**

भारत हा गरीब देश आहे. बहुसंख्य लोकांचे दारिद्रय ही भारतांच्या अर्थव्यवस्थेपुढील प्रमुख समस्या आहे. स्वातंत्र्य पुर्व काळात भारताची आर्थिक प्रगती खुंटण्याचे प्रमूख कारण म्हणजे ब्रिटीश सरकारची भारतातील सुमारे १५० वर्षाची राजवट हे होय. भारतातील शेती व्यवसायातील सरंजमशाही सदृश संबंधांची वाढ, अवजड व मुलभूत उद्योगांचा जवळजवळ संपूर्ण अभाव, भारतात तयार होणाऱ्या मालाला ब्रिटीश मालाशी यशस्वी स्पर्धा करण्यात आलेले अपयश, भारतात आर्थिक धोरणे आखताना व कार्यवाहीत आणताना ब्रिटनच्या हिताची केली गेलेली जपणूक यामुळे भारतीय शेती व्यवसायाला निर्वाह शेतीचे स्वरूप प्राप्त झाले. औद्योगिकदृष्टया भारत अप्रगत राहीला. औद्योगिक विकास न झाल्याने वाढत्या लोकसंख्येमुळे शेती क्षेत्रावर वाढता ताण पडत गेला. यामुळे भारतात गरिबी अधिक दिसून येते.

भारतातील बहुसंख्य लोकांचे दरडोई वास्तव उत्पन्न अल्प असल्यामुळे दैनंदिन जीवनासाठी आवश्यक असणाऱ्या वस्तू व सेवांसाठी असणारी मागणी खालच्या पातळीवर राहते. अल्प वास्तव उत्पन्नामुळे लोकांची खरेदीशक्ती कमी असते यामुळे उद्योजकांना व उत्पादकांना जास्तीत जास्त गुंतवणूकीसाठी प्रेरणा मिळत नाही. भांडवल गुंतवणूक कमी असल्यामुळे आर्थिक विकासाचा दर कमी राहतो. परिणामी, दारिद्रयामध्ये आणखीनच भर पडत जाते.

**२) दारिद्रयाच्या व्याख्या**

दारिद्रयाची व्याख्या स्थलपरत्वे, कालपरत्वे भिन्न –भिन्न असते. दारिद्रयाची संकल्पना देशानुसार बदलणारी आहे. जी व्याख्या भारतात केली ती जपानमध्ये लागू पडेलच असे नाही. भारतात दारिद्रयाची व्याख्या पुढीलप्रमाणे करता येईल.

१. ''ज्या व्यक्ती आपल्या मुलभूत गरजा भागविण्यापुरते सुद्धा उत्पन्न मिळवत नाही त्यांना दरिद्री संबोधले जाते.'' परंतू अमेरिकेसारख्या विकसित देशामध्ये दारिद्रयाची व्याख्या वेगळी आहे. तेथे मुलभूत गरजा भागविण्याइतके उत्पन्न सर्वांना मिळत असते परंतू ज्या व्यक्तीला किमान जीवनमान टिकवून ठेवता येईल एवढेसुद्धा उत्पन्न मिळत नाही अशा लोकांना दरिद्री म्हटले जाते . या अडचणींवर मात करण्यासाठी अलिकडे प्रत्येक व्यक्तीला मुलभूत अत्यावश्यक वस्तू विकत घेता येतात की नाही ते पाहीले जाते. लोकांच्या गरजा व सवयी बदलतात. त्यामुळे गरजांचे प्रामाणीकरण शक्य नाही दृ

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor - 6.625

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

**International Multidisciplinary E-Research Journal**

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2020 Special Issue - 235 (A)

## Strengthening Business Competencies for Sustainable Development

Guest Editor
Dr. K.K. Deshmukh
Principal
S.N. Arts, D.J. Malpani Commerce &
B.N. Sarda Science College, Sangamner

Executive Editor :
Dr. Arun Gaikwad
Professor & Head, Dept. of Commerce

Associate Editors :
C.A. Dr. A. D. Divekar
Prof. L. B. Malusare
Dr. H. B. Panjabi
C.M.A. S. G. Wadghule

Chief Editor : Dr. Dhanraj Dhangar

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E-Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 235(A) : CBCSD 2020
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

# INDEX



| No. | Title of the Paper | Author's Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | Goods and Service Tax (GST) and Impact of GST on Indian Economy | Mr. Balasaheb Aher | 05 |
| 2 | Indian Insurance Industry Growth & Future Developments | Prof. Yashwant Chaudhari | 09 |
| 3 | Skill Development : Opportunities and Challenges in India | Prof. Sanket Nikam | 12 |
| 4 | Global Financial Crisis & India -Problems and Recommendations- | Lt. S. A. Palande | 16 |
| 5 | Present Scenario of Selected Companies CSR in India | Dr. G. D Borde, Mr. S.D Gopale | 23 |
| 6 | A Descriptive Study of Industrial Policies of India | Dr. Mrs. Kanchan Sananse | 27 |
| 7 | An Overview of E- Commerce Marketing In India | Dr. Nirmal Vijay D. | 32 |
| 8 | Impact of Education on Women Empowerment in The Middle Class Population In Pune And Pimpri Chinchwad City | Prof. Archana Aher, Dr. Rajendra Rasal | 39 |
| 9 | Challenges and Opportunities of Digital Payment System in India | Mr. Satyanarayan Rathi | 47 |
| 10 | E-Commerce Industry Challenges and Opportunities in Indian Perspective | Dr. S. R. Nikam | 52 |
| 11 | Sustainable Development in Agricultural Sector in India | Dr. Shirish Bhosale | 56 |
| 12 | Strategies of Social Media Marketing | Mr. B. N. Murtadak | 60 |
| 13 | Agriculture Sector & Sustainable Development | Dr. Atul Salunke | 63 A |
| 14 | Recent Trends in Digital Women Entrepreneurship Management and Development in India | Dr. Shivaji Thore | 66 |
| 15 | Study of Sustainable Development in Tourism Industry of Maharashtra | Prof. Ganesh Teltumbade, Dr. Kewal Khairnar | 70 |
| 16 | Global Economy and Recent Trends in India | Dr. Shobha Rahane | 78 |
| 17 | Demonetization: Move Towards Cashless Economy (Importance and Challenges) | Mrs. Nilam Kale | 83 |
| 18 | Empowerment of Women - Role of BAIF Development Research Foundation | Dr. H. M. Jare, Prof. Sujata Gaikwad | 87 |
| 19 | To Study of MUDRA Yojana | Mr. S. A. Mahale | 92 |
| 20 | Online Marketing Strstegies | Dr. D. M. Raut | 98 |
| 21 | Consumer Market outlook and Knowledge Perception Analysis Towards Commodity Trading in India | Nilesh Tayade & Mahessh Kadam | 100 |
| 22 | Corporate Social Responsibility and Sustainable Development in India | Dr. Archana Mali | 110 |
| 23 | Strengthening Business & E-Commerce | Dr. Ashok Chavan | 116 |
| 24 | Globalization & Indian Agriculture | Professor (Dr.) Suhas Avhad, Mr. Ganesh Walunj | 122 |
| 25 | E-Commerce in India: Expansion, Merits and Demerits | Dr. Adinath Gholap, Dr. Mangal Jagtap | 126 |

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 235(A) : CBCSD 2020
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

# Agriculture Sector & Sustainable Development

**Dr. Atul Salunke**
K.E.S. C.D. Deshmukh Commerce &
Sau. K.G. Tamhane Arts College, Roha, Raigad.
Email- atulsalunke2007@gmail.com.
Mob- 9422495813.

**Absract-**

*Agriculture is an important contributor to employment with nearly 50 percent of the population employed in it. Agriculture sector supports the industry by providing raw materials and necessary inputs for its production. Government initiatives in Agricultural sector provide the hand holding support for the Agriculture sector to grow and progress. Agriculture sector has to achieve its objective of maximizing efficiency and also ensuring equity in a sustainable manner.*

**Key Words-** Agriculture, Sustainable Development.

**Introduction-**

For a developing economy like India, agriculture is immensely important. Even a small tweak in the agriculture sector, whether it is positive or negative, impacts the economy to a great extent. The primary challenge for agriculture sector is to provide food to 1.3 billion population in India. With National Food Security Mission already in place, the onus is on agriculture to provide food for all in a sustained manner.

Agriculture is also an important contributor to employment with nearly 50 percent of the population employed in it. Agriculture sector supports the industry by providing raw materials and necessary inputs for its production. On the other hand, it consumes fertilizers, pesticides produced by the industries for its own production. So, there exists an inter dependence between agriculture and industry which is essential for the socio-economic development of the country.

Keeping in view, the importance of agriculture in socio-economic fabric of India, the Government has given special emphasis and attention to this sector.

**Agriculture Sector in India : Current Scenario-**

India's economic growth in 2019 is estimated at 6.8 percent. Agriculture accounts for nearly 18 percent of GDP, and employs almost half of country's total workforce.

The growth of agriculture sector in India has always been volatile, especially in last decade. Inconsistency in growth rate of agriculture has impacted farmer's income and credit worthiness adversely. Despite the volatility, in 2017-18, total food grain production in India was estimated at 275 million tonnes (MT). India is also the largest producer of pulses in the world accounting for 25 percent of global production in 2017-18 was 165 MT, making India the largest producer of milk, jute and pulses. India is also the second-largest producer of rice, wheat, groundnuts, cotton and sugarcane. It is also the second-largest fruit and vegetable producer, accounting for 10.9 percent and 8.6 percent of the world fruit and vegetable production, respectively. Share of agriculture sector in total exports of the country is 11.76 percent for the year 2018-19 as per DGCIS data. The exports of agricultural products provide enhanced marketing opportunities for the agricultural producers and also in turn increase their income.

# राष्ट्रीय सेवा योजना

## - दृष्टीक्षेप

संपादक
डॉ. व्ही. सी. दंडे

# अनुक्रमाणिका


०१) **राष्ट्रीय सेवा योजना : संकल्पना**

– डॉ. अतुल साळुंके

०२) **राष्ट्रीय सेवा योजना व विद्यार्थ्यांच्या संधी**

– डॉ. विरभद्र दंडे

०३) **राष्ट्रीय सेवा योजना व आपत्ती व्यवस्थापन**

– डॉ. डी. डी. गायकवाड

०४) **समाज बांधनीत रा.से.यो ची भूमिका**

– प्रा. शंकर राजे, प्रा. शिवानंद भांजे

०५) **राष्ट्रीय सेवा योजना : संस्काराची प्रयोगशाळा**

– प्रा.बी. आय. परदेशी

०६) **एन. एस. एस. आणि देवदासी निर्मूलन**

– डॉ. एस. जे. आवटे

०७) **सुजान नागरिक बनवणारी योजना : रा.से.यो.**

– प्रा. बी. एस. बिडवे

०८) **राष्ट्रीय पथ संचलन शिबीर जीवनातील अमूल्य संधी**

– डॉ. सविता कूलकर्णी

०९) **राष्ट्रीय सेवा योजना व व्यक्तीमत्व विकास**

– प्रा. पी. पी. लगड

१०) **राष्ट्र विकासात राष्ट्रीय सेवा योजनेची भूमिका**

– डॉ. राजेश करपे

# १. राष्ट्रीय सेवा योजना

**डॉ.अतुल साळुंके**
**राज्य संपर्क अधिकारी/ विशेष कार्य अधिकारी**

राष्ट्रीय सेवा योजना ही केंद्रशासन पुरस्कृत योजना महाराष्ट्र राज्यातील सर्व कृषी/अकृषी विद्यापीठांमधून सन १९६९ (गांधी जन्मशताब्दी वर्ष) पासून सुरू असून केंद्र शासनाच्या पत्र क्र.एफ १/२०/८६ III दि. ३०.३.१९८७ अन्वये ती निरंतर सुरू राहणार आहे.

ही योजना सुरूवातीला संचालक, खेळ व युवा विभाग, महाराष्ट्र शासन, पुणे यांच्या अधिपत्याखाली सुरू होती. योजनेचे विस्तृत स्वरूप पाहता, केंद्र शासनाने आपले पत्र क्र. एफ १/३/८७ YS III / १९८१ दि. २४.३.१९९० च्या शासन निर्णयानुसार सन १९९० पासून उच्च व तंत्र शिक्षण विभागाच्या नियंत्रणाखाली एक कक्ष स्थापन करण्यात आला असून या कक्षातील अधिकारी व कर्मचारी यांच्यावर होणाऱ्या प्रशासकीय खर्चाची १००% प्रतिपूर्ती केंद्र शासनातर्फे करण्यात येते.

**राष्ट्रीय सेवा योजनेचा इतिहास -**

**प्रस्तावना -**

महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांच्या मनात सामाजिक जाणीव निर्माण करणे व त्याचा सर्वांगीण व्यक्तिमत्व विकास घडवून आणणे या उद्देशाने राष्ट्रीय सेवा योजनेची स्थापना झाली.

स्वावलंबन, चारित्र्यवर्धन व सामाजिक बांधिलकी या मूल्यांचा समन्वय नवीन शिक्षण पद्धतीत घडवून आणण्यासाठी महात्मा गांधींच्या जन्मशताब्दी वर्षापासून म्हणजे २४ सप्टेंबर १९६९ साली महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांसाठी राष्ट्रीय सेवा योजना भारत सरकारच्या युवा कल्याण व क्रीडा मंत्रालयाअंतर्गत राबविण्यात येत आहे.

राष्ट्रीय सेवा योजनेवर प्रारंभ करण्यासंबंधीची संकल्पना ही महात्मा गांधी,

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

ICSSR, New Delhi Sponsored

National Level Seminar in Interdisciplinary subject

# FINANCIAL LITERACY AND DIGITAL PAYMENT SYSTEM IN INDIA

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Borgaon (Kale), Tq.& Dist. Latur

Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

## VASANTRAO KALE MAHAVIDYALAYA,

DHOKI, TQ. & DIST. OSMANABAD. (MS)

**Saturday, 28th December 2019**

**Pri. Dr. Haridas Fere**
Chief Editor

**Dr. Balasaheb Maind**
Editor

Organized By

**Department of Economics**

**Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki**

Tq. & Dist. Osmanabad (MS).

**Vol. II**

| Sr. No. | Name of Author | Title Of Paper | Page No. |
|---|---|---|---|
| 76. | आर. डी. गणापुरे<br>डी. पी. बिराजदार | आर्थिक साक्षरता आणि भारतीयांची गुंतवणूक प्रवृत्ती | 232 |
| 77. | ज्योती ललित अधाने | डिजिटल इंडिया व वित्तीय समावेशन | 236 |
| 78. | डॉ.ज्ञानेश्वर जिगे | रोकड विरहित अर्थव्यवस्था : भारताच्या संदर्भात संधी आणि आव्हाने | 240 |
| 79. | डॉ. सुनिल अण्णा गोरडे | राष्ट्रीय कृषी बाजार (ई-नाम) प्रणालीचे एक अर्थशास्त्रीय विश्लेषण | 242 |
| 80. | डॉ.प्रमोद बालाजीराव बेरळीकर | कॅशलेस व्यवहार व ग्रामीण अर्थव्यवस्था | 244 |
| 81. | प्रा. डॉ. अनंत नरवडे | रोकडविरहित अर्थव्यवस्था- समस्या आणि उपाय | 246 |
| 82. | गोविंद रामराव काळे<br>डॉ. दिपक एम. भारती | भारतातील रोकडविरहीत व्यवहार : एक आव्हाण | 249 |
| 83. | प्रा. डॉ. ए. टी. शेवाळे | भारतातील ई-कॉमर्स - आर्थिक व्यवहार व विनिमय | 251 |
| 84. | प्राचार्य डॉ. हरिदास फेरे<br>डॉ. बी.व्ही. मैंद | भारतातील डिजिटलायझेशन आणि डिजिटल पेमेंट सिस्टिम एक अभ्यास | 254 |
| 85. | डॉ.माधवराव नरसिंगराव बिरादार | रोकडरहित अर्थव्यवस्था व रोकडरहित व्यवहाराचे विविध पर्याय | 256 |
| 86. | श्यामराव लक्ष्मण वासनीकर<br>प्रा डॉ. विजय भोपाळे | कॅशलेस अर्थव्यवस्था आव्हाने आणि उपाय | 259 |
| 87. | डॉ. एस.एस.देवनाळकर | डिजीटल पेमेंट सिस्टिमचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम | 261 |
| 88. | एम. एस. बिडवे | डिजीटल ग्रंथालय, साहित्य सादरीकरण व शोधप्रक्रिया : एक अभ्यास | 263 |
| 89. | डॉ. मिनाश्री भास्कर जाधव | डिजिटल साक्षरता आणि भारतीय अर्थव्यवस्था | 266 |
| 90. | राहुल शिवाजी तिगोटे<br>डॉ. दीपक भुसारे | काळया पैशाला लगाम : रोखरहित अर्थव्यवस्था | 269 |
| 91. | आकाशनाथ दत्तात्रय बोरकर,<br>डॉ. एन.के.मुळे | निश्चिलनीकरण आणि रोकडविरहित अर्थव्यवस्था | 271 |
| 92. | डॉ. कार्तिक पोळ<br>प्रा. प्रमोद मुळे | रोकड विरहित व्यवहारात सरकारने केलेले प्रयत्न | 276 |
| 93. | प्रा. आचार्य बालाजी वैजनाथराव | रोख विरहीत व्यवहार : आव्हाने व उपाय | 278 |
| 94. | डॉ. ए. एच. अत्तार | डिजिटल इंडिया मोहीम : एक आर्थिक क्रांती | 281 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 116. | प्रा.डॉ.नानासाहेब पंडितराव मनाळे | डिजिटल तंत्रज्ञान : काळाची गरज – एक अभ्यास | 337 |
| 117. | डॉ. अर्जून मोहनराव मोरे | शेती उद्योग आणि सेवा क्षेत्रातील डिजीटल पध्दती | 339 |
| 118. | डॉ. महेशकुमार मोटे | कॅशलेस प्रणाली आणि ग्रामीण अर्थव्यवस्था | 342 |
| 119. | अनुराधा रामभाऊ पाऊलबुध्दे<br>प्रा. डॉ. अशोक कोरडे | भारतातील वित्तीय व्यवहारांच्या संदर्भात डिजिटल पेमेंट सिस्टम - एक दृष्टिक्षेप | 344 |
| 120. | प्रा.डॉ.एल.एच.पाटील<br>महेश शिवाजीराव नेलवाडे | कॅशलेस अर्थव्यवस्था आणि नवे पर्याय | 346 |
| 121. | प्रा. नानासाहेब श्रीरंग पटनुरे<br>प्रा. डॉ.मनोजकुमार यादवराव सोमवंशी | रोकडविरहित व्यवहारासाठी सरकारी उपाय-योजना | 350 |
| 122. | प्रा.डॉ.कालिदास दिनकर फड | कॅशलेस व्यवहार आणि बदलती माध्यमे | 353 |
| 123. | प्रा.डॉ. दैवशाला चत्रभुज रसाळ | रोकडविरहीत व्यवहाराचे फायदे – तोटे | 355 |
| 124. | प्रा.डॉ. एस.ए. सांगळे | पैसा मुक्त बाजार व्यवहारासमोरील आव्हाने व संधी | 358 |
| 125. | प्रा. डी. एन. सरडे | पारंपारिक ग्रंथालयाचा डिजिटल प्रवास: एक अभ्यास | 362 |
| 126. | डॉ.नामानंद गौतम साठे | कॅशलेस व्यवहार आणि ग्रामीण अर्थव्यवस्था | 364 |
| 127. | डॉ. एम.एल. शेळके | कॅशलेस व्यवहार : लाभ आणि आव्हाने | 366 |
| 128. | प्रा. अलका विठ्ठल शिंदे | डिजिटल प्रशासन पारदर्शकता आणि जनसहभाग | 368 |
| 129. | प्रा.डॉ. महेबुबपाशा बाबूमीयाँ शिरमाळे | आंतरराष्ट्रीय व्यापारावर परिणाम करणाऱ्या घटकांचा अभ्यास | 370 |
| 130. | प्रा. बाबासाहेब ग्यानदेव सोनवणे<br>प्रा. डॉ. एस. एस. मुळे | डिजीटल पेमेंट पद्धतीचा पंचायतराज संस्थांवरील परिणामांचा अभ्यास | 372 |
| 131. | सुमित शिवाजी सातपुते | रोकड विरहीत व्यवहार व शासकीय योजना - एक अभ्यास | 374 |
| 132. | डॉ. दीपक व्ही भुसारे,<br>जयश्री आसाराम तळेकर | डिजिटल पेमेंट व्यवस्था :- फायदे आणि अडचणी | 377 |
| 133. | प्रा.जगन्नाथ टोंपे<br>प्रा.डॉ.प्रभाकर किर्तनकार | रोकड विरहीत अर्थव्यवस्था | 379 |
| 134. | प्रा.डॉ.अनिल दि.वाडकर | डिजीटल देयक प्रणाली वस्तुस्थिती आणि विपर्यास | 381 |
| 135. | प्रा. सुकुमार दत्ता पाटील<br>प्रा.डॉ. एल.एच. पाटील | चिरंतन शेती आणि अन्नसुरक्षा यामध्ये 'डिजिटल देयकाची' भूमिका | 384 |

# चिरंतन शेती आणि अन्नसुरक्षा यामध्ये 'डिजिटल देयकाची' भूमिका

प्रा. सुकुमार दत्तापाटील
डॉ. सी.डी देशमुख वाणिज्य
सौ. कुसूमताई ताम्हाणे कला महाविद्यालय
रोहा, जि - रायगड.

प्रा.डॉ. एल.एच. पाटील
शिवाजी महाविद्यालय उदगीर

**प्रस्तावना -**

ऐतिहासिकदृष्ट्या आज शेतीमध्ये क्रांतीची मालिका सुरू झाली आहे त्यामुळे शेतीची कार्यक्षमता, उत्पादनक्षमता, उत्पन्न आणि नफा हा पूर्वीपेक्षा वाढला आहे. पुढील दशकातील बाजारपेठ अंदाजानुसार "डिजिटल कृषी क्रांती" ही सर्वात नवीन सुधारणा असेल की ज्यामुळे जागतिक लोकसंख्येची अन्नधान्याची गरज भागविण्यास मदत होईल. अन्नसाखळीचा प्रत्येक भाग हा डिजिटल मध्ये बदलून जाईल. डिजिटल साधनाच्या आधारे संसाधनांचे व्यवस्थापन अधिक कार्यक्षम, अधिक पर्याप्त आणि समाधानकारक होवू शकेल. डिजिटल शेती ही अशी प्रणाली तयार करेल की जी हवामान बदलामुळे उद्भवणाऱ्या समस्यांच्या पलिकडे जावून उत्पादनक्षम, अधिक स्वीकारार्य आणि उत्पादन वाढीस अनुकूल असणारी ठरेल. चिरंतन विकासाच्या उद्दिष्टांच्या संदर्भात डिजिटल शेतीमध्येकृषी उत्पादकतेद्वारे, बाजार संधींच्या द्वारे तसेच कमी खर्चाच्या द्वारे अधिक लाभ देण्याची क्षमता आहे. कृषी अन्नक्षेत्राचे डिजिटलायझेशन करण्याचे संभाव्य फायदे आहेत. पण त्यासाठी शेतीप्रणाली, ग्रामिण अर्थव्यवस्था तसेच समुदाय आणि नैसर्गिक संसाधन व्यवस्थापनाचे मोठे परिवर्तन आवश्यक आहे. आज भारत देशामध्ये शेतीव्यवसायाची परिस्थिती सुधारावयाची असल्यास शेतीमध्ये डिजिटल क्रांती झाल्याशिवाय पर्याय नाही. यामध्ये विशेषतः डिजिटल देयके' या संकल्पनेचा स्वीकार कृषी क्षेत्रासाठी केल्यास निश्चितच शेतकऱ्यांना त्याचा फायदा होईल. कारण शेतकऱ्यांना सरकारकडून वेळोवेळी मिळणाऱ्या रकमा, देयके, अनुदाने, आपत्कालीन मदत तसेच पीक विम्याची रक्कम ही सरळ शेतकऱ्यांच्या बँक खात्यात जमा होईल आणि निश्चितच शेतकऱ्यांना त्याचा फायदा होईल. तसेच ही मदत थेट शेतकऱ्यांच्या बँक खात्यात जमा होत असल्याने यामध्ये कोणताही मध्यस्थ किंवा सरकारी अधिकारी यांचा हस्तक्षेप होणार नाही आणि त्यामुळे भ्रष्टाचाराला आळा बसेल. कृषी अन्नपध्दतीच्या डिजिटलायझेशनमध्ये ग्रामिण आणि शहरी भाग, स्त्री आणि पुरूष तसेच तरूण लोकसंख्याइत्यादींना होणारा संभाव्य लाभ असमानरित्या वाटला जाण्याचा धोका आहे. एखादा भाग डिजिटल होण्यासाठी त्या भागात इंटरनेट तसेच इंटरनेट टॉवर्स इत्यादींचा विकास होणे गरजेचे आहे. आणि ही सर्व व्यवस्था शहरी भागात मोठ्या प्रमाणावर असते त्यामुळे शहरी भागाला डिजिटल यंत्रणेचा फायदा आधिक होण्याची शक्यता असते.

**संशोधनातील कूट शब्द-** डिजिटल देयक, चिरंतन शेती व अन्नसुरक्षा

**३) संशोधनाची उद्दिष्टे-**

i) डिजिटल देयक ही संकल्पना समजून घेणे.

ii) चिरंतन शेतीची संकल्पना समजून घेणे.

iii) चिरंतन शेती आणि अन्नसुरक्षा यामध्ये डिजिटल देयकाची भुमिका अभ्यासणे.

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

**४) संशोधनाची गृहितके-**

i) डिजिटल देयकामुळे पैसा, वेळ आणि श्रम यामध्ये बचत होते.

ii) डिजिटल देयकामुळे भ्रष्टाचाराला आळा बसतो.

iii) डिजिटल देयकामुळे योग्य व्यक्तींकडे त्यांची योग्य देणी पोहोचतात.

**५) डिजिटल परिवर्तनासाठी अटी आणि डिजिटल देयकाची गरज -** शेती क्षेत्रामध्ये डिजिटल परिवर्तनासाठी कांही महत्वाच्या अटी आहेत त्या पुढीलप्रमाणे.

i) पहिली अट म्हणजे डिजिटल तंत्रज्ञानाचा वापर करण्यासाठी मूलभूत परिस्थिती आवश्यक आहे त्यामध्ये या तंत्रज्ञानाची उपलब्दता तसेच परवडणारी क्षमता आणि माहिती तंत्रज्ञान उपलब्दता व माहिती तंत्रज्ञास सहाय्यक आणि धोरणात्मक कार्यक्रम राबविले पाहिजेत.

ii) दुसरी अट म्हणजे इंटरनेट, मोबाईल फोन, डिजिटल कौशल्य आणि सोशल मिडियाचा उपयोग कसा करून घ्यावा याची माहिती व्यक्तीला असणे गरजेचे आहे.

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor - 6.625 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2020 Special Issue - 235 (D)

## Strengthening Business Competencies for Sustainable Development

Guest Editor
Dr. K.K. Deshmukh
Principal
S.N. Arts, D.J. Malpani Commerce &
B.N. Sarda Science College, Sangamner

Executive Editor :
Dr. Arun Gaikwad
Professor & Head, Dept. of Commerce

Associate Editors :
C.A. Dr. A. D. Divekar
Prof. L. B. Malusare
Dr. H. B. Panjabi
C.M.A. S. G. Wadghule

Chief Editor : Dr. Dhanraj Dhangar

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E-Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 235 (D) : CBCSD 2020
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

## INDEX


| No. | Title of the Paper | Author's Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | Transfer Pricing | Prof. Prashant Ugale | 05 |
| 2 | Analytical Study of E- Commerce | Dr. Lalitkumar Ingawale | 09 |
| 3 | Dr. B.R. Ambedkar's Thoughts and Indian Government Policies on Economic Empowerment of Indian Women and Their Outcome in the Present Context | Mr. Olya Vasave | 12 |
| 4 | Impact of GST Reforms in Indian Economy | Dr. Arun Gaikwad & CMA Satish Dhokare | 17 |
| 5 | Correlation between Mutual Funds Investment and CNX Nifty | Dr. Dalbir Singh Kaushik | 23 |
| 6 | A Study of Internet Marketing in India : Challenges and Opportunities | Prof. Mrs. Shakuntala Gaikwad | 28 |
| 7 | A Study of Internet Marketing in India : Advantages & Disadvantages | Prof. Rupali Kotwal | 33 |
| 8 | Make in India : A Project of Change India | Dr. Amol Gaikwad | 37 |
| 9 | A Study of Handwriting & Specimen Signature Forensics | Shreyas Shelke | 40 |
| 10 | Role of Micro Finance in Rural Development | Prof. Geetanjali Endayit | 49 |
| 11 | भारतातील चिरंतन शेती विकासाचे विश्लेषण | डॉ. एल. एच. पाटील, प्रा. सुकुमार पाटील | 53 |
| 12 | छत्रपती शिवाजी महाराजांचे आर्थिक धोरण | प्रा. सीमा भोसले | 60 |
| 13 | संगमनेर तालुक्यातील प्रादेशिक असमतोलाचे अध्ययन | वैशाली कानवडे | 65 |
| 14 | पैशाची उत्क्रांती व चलन निश्चलीकरण | प्रा. सीमा गुंजाळ, डॉ .प्रमोदिनी कदम | 69 |
| 15 | महाराष्ट्रातील शेतीचा शाश्वत विकास | डॉ. डी. एन. कारे | 73 |
| 16 | महाराष्ट्रातील शेतीविषयक विकासाच्या योजना | डॉ. मनिषा आहेर | 77 |
| 17 | अहमदनगर जिल्ह्यातील फळ विक्रेत्यांचे अर्थशास्त्र | ईश्वर म्हस्के | 80 |
| 18 | निराधार बालकांच्या संगोपनासाठी काम करणाऱ्या स्वयंसेवी संस्थांचे चिकित्सक अध्ययन | गीतांजली सरोदे | 83 |
| 19 | मुद्रा बँक योजनेच्या भारतातील कामगिरीचा आढावा | डॉ. शेखर पाटील | 86 |
| 20 | भारतातील कृषी आणि उद्योगांचे वर्तमान व भविष्य | डॉ. प्रमोदिनी कदम | 91 |
| 21 | उद्योजक पर्यावरण आणि भारतातील शेतकरी उद्योजकतेमधील अडथळे | श्री. आर. बी. त्रिभुवन | 95 |
| 22 | बी-स्कूलसाठी ब्रँड बिल्डिंग मॉडेल | प्रा. महेशकुमार केदार | 99 |
| 23 | शाश्वत शेती | प्रा. कविता कोटकर | 107 |
| 24 | डिजिटल इंडिया अभियानाचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवर झालेला परिणाम | डॉ. जयश्री लोहगावकर | 114 |
| 25 | भारताच्या आर्थिक विकासात म्युचुअल फंडाची भूमिका | डॉ. मनीषा सामंत | 120 |
| 26 | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा निवृत्ती वेतन योजनेचा श्रीरामपूर तालुक्यातील अंमलबजावणीचा आढावा | प्रा. मारुती केकाणे | 124 |
| 27 | भारतीय बँकांमधील डिजिटल वित्तीय सेवा प्रणाली- एक आधुनिक दृष्टीक्षेप | प्रा. विकास शिंदे | 130 |
| 28 | टोमॅटो उत्पादन व विपणनातील अडचणी | प्रा. साहेबराव निकम | 138 |
| 29 | म्युचुअल फंड योजना | डॉ. एस. एम. भुजबळ | 142 |

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625,
Special Issue 235 (D) : CBCSD 2020
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

# भारतातील चिरंतन शेती विकासाचे विश्लेषण

प्रा.डॉ.एल.एन.पाटील (M.A.PhD)
उपप्राचार्य आणि संशोधन मार्गदर्शक
(अर्थशास्त्र)
शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर
जिल्हा–लातूर.

प्रा.सुकुमार दत्ता पाटील
को.ए.सो.चे चिंतामणराव देशमुख
वाणिज्य व सौ.कुसुमताई ताम्हाणे
कला महाविद्यालय, रोहा. जि. रायगड.
पिनकोड– ४०२ ११६.
ई मेल– patilsdeco@gmail.com.
मो. ७२७६५७३५८९.

**१) गोषवारा–**

भारतीय कृषी क्षेत्रातील नवीन कार्य सूचीचे एक असे ध्येय असले पाहिजे जे कृषी प्रणाली सुधारण्यावर लक्ष केंद्रित करेल आणि एकात्मिक पद्धतीने ग्रामीण विकासाकडे लक्ष देईल. भारतीय शेतीचे पारंपारिकतेकडून आधुनिकतेकडे स्थित्यंतर होताना आणि चिरंतनता सुनिश्चित करण्याचे उद्दिष्ट अधिक महत्त्वाचे बनले आहे. अन्नधान्याची वाढती मागणी पूर्ण करण्यासाठी, दारिद्रय आणि कुपोषण कमी करण्यासाठी, अधिक प्रभावीपणे योगदान देण्यासाठी आणि पर्यावरणदृष्टया अधिक टिकाऊ आणि चिरंतन होण्यासाठी कृषी क्षेत्रात बदलांची आवश्यकता आहे. हे आव्हान धोक्याचे असले तरी व्यवहार्य आणि अपरिहार्य आहे. सदरचा पेपर हा शेतीच्या शाश्वत विकासाशी संबंधित आहे. अलिकडे अधिकाधिक शेतकरी हे मुक्त विचारसरणीचे होत आहेत आणि सरकारही नवीन उपक्रम घेऊन येत असल्याने सकारात्मक बदलही आला आहे. सदरच्या अभ्यासातून असे सूचवायचे आहे की, सर्वसाधारणपणे आणि विशेषतः शाश्वत शेतीच्या विकासासाठी मोठया प्रमाणात संख्यात्मक, संरचनात्मक आणि प्रशासकिय समस्या दूर करणे आवश्यक आहे.

**२) संशोधनातील कूट शब्द–** भारतीय शेती, धोरण, सुरक्षितता आणि चिरंतनता.

**प्रस्तावना–**

मानवी विकासामध्ये शेतीची जी भूमिका आहे त्यामध्ये कोणतीच अतिशयोक्ती नाही. मानवी जीवनामध्ये शेतीचे महत्त्व अनन्यसाधारण आहे हे आता सर्वमान्य झाले आहे. शेती जागतिक अन्न व्यवस्थेचे आणि टिकाऊ विकासाच्या अनेक स्तंभांचे बहुआयामी योगदान देते. आज शेती अनेक आव्हांनांना सामोरे जात आहे. त्यामुळे प्रत्येक वर्षी जगाचे पालन पोषण करणे अधिक कठिण बनत चालले आहे. एका बाजूला मोठया प्रमाणावर जागतिक लोकसंख्या वाढत आहे तर दुसऱ्या बाजूस हवामानातील बदल, प्रदुषण, जमिनीची सुपिकता कमी होणे आणि इतर अनेक ताण–तणावांमुळे शेती उत्पादन मात्र कमी होत चालले आहे. हवामान बदलांच्या प्रादेशिक आणि स्थानिक प्रभावाबद्दल अनिश्चितता अस्तित्वात आहे. परंतू एकूणच जागतिक स्थितीवरून असे सूचित होते की, अन्न पुरविण्यात होणाऱ्या अल्पमुदतीच्या परिवर्तनामुळे अन्न प्रणालीची स्थिरताही जास्त धोकादायक असेल. अन्नधान्याची वाढती मागणी पूर्ण करण्यासाठी, दारिद्रय आणि कुपोषण कमी करण्यासाठी आणि त्याकरिता अधिक प्रभावीपणे योगदान देण्यासाठी तसेच पर्यावरणीयदृष्टया अधिक टिकाऊ होण्यासाठी कृषी क्षेत्राने बदलले पाहिजे आणि हे शेती क्षेत्रातील परिवर्तन चिरंतन विकासाची १५ ध्येये गाठण्यासाठी निश्चित उपयुक्त ठरणार आहे. सध्याच्या पिढीतील गरिबी आणि उपासमार निर्मुलन करणे हे अत्यंत आवश्यक आहे आणि हे चिरंतन शेती विकासाचे महत्वाचे उद्दिष्ट मानले जाते. जगातील बहुतांश गरिब लोक हे ग्रामीण भागात राहतात आणि केवळ ग्रामीण भागातील शेती विकासामुळेच या गरीब लोकांची आर्थिक व सामाजिक